शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसंबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आलम के काव्य में भाव निरूपण

डॉ.अंजूबाला सीमर
सहायक आचार्य
श्रीकृष्ण सत्संग बालिका महाविद्यालय
सीकर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

रीतिकालीन स्वछंद प्रेमधारा के कवियों में आलम का नाम उल्लेखनीय है। आलम का रचनाकाल संवत 1740 से संवत 1760 के लगभग था। आलम की कविता में प्रेमोन्मत्त कवियों की धारा के सभी गुणों का परिपाक हुआ है उसमें तन्मयता है, चमत्कारिक अलंकरण का विरोध है, उक्ति-वैचित्र्य है और सबसे बड़ी 'प्रेम की पीर' है। उन्होंने उन्मादमयी उक्तियों का वर्णन किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में आलम के काव्य में भाव तथा रस-योजना का विवेचन किया गया है।

प्रस्तावना

भारतीय काव्यशास्त्रीय विवेचन में रस का गौरवपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय आचार्यों ने काव्य और उसके उपादानों के निरूपण में प्रायः रस को विशेष महत्व प्रदान किया है। आचार्य भरतमुनि ने रस सम्बन्धी सामग्री को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में प्रस्तुत किया है। जिन आचार्यों का किसी अन्य सम्प्रदाय अथवा काव्य-सिद्धान्त से सम्बन्ध था, वे भी काव्य में रस की भूमिका की उपेक्षा नहीं कर सके। भामह, दण्डी और उद्भट यद्यपि अलंकारवादी थे फिर भी इन्होंने रस को समुचित स्थान दिया। यही स्थिति रीतिवादी वामन, ध्वनिवादी आनन्दवर्धन और वक्रोक्तिवादी कुन्तक की रही।[1] साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने तो 'रसात्मकं वाक्यंकाव्यम्' कहकर रस को काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

रस का मूल कारण 'भाव' को ही माना गया है। रसों की उद्भावना भावों के प्रदर्शन से होती है, पर भावों के पूर्व रस की कल्पना नहीं की जा सकती है और भावों के अनुवर्ती रस निश्चय ही होंगे और नाटकीय प्रदर्शन के मध्य में ये पारस्परिक सम्बन्ध के आधार पर व्यंजित होते हैं।[2] भरतमुनि ने अपने 'नाट्य शास्त्र' में भाव और रस के पारस्परिक सम्बन्ध के बारे में विशद् विवेचन किया है। भाव और रस के सम्बन्ध को वृक्ष और बीज के दृष्टान्त द्वारा स्पष्ट करते हुए भरत लिखते हैं "वृक्ष बीज से उत्पन्न होता है और फल-फूल वृक्ष से उत्पन्न होते हैं इसी प्रकार रस सम्पूर्ण भावों के मूल है और इसी प्रकार भाव सम्पूर्ण रसों के स्रोत हैं।"[3] इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भाव तथा रस एक दूसरे के परिपूरक हैं।

आलम स्वच्छन्द प्रेम के कवि थे। उनका हृदय प्रेम के जल से लबालब भरा हुआ था। यही कारण है कि प्रेम के सागर में वे गोते लगाते रहते थे। उन्होंने अपना सब कुछ खोकर बदले में प्रियतम को पाया था और उनकी कविता प्रेम के अनुसंधान में ही लीन रही। उनका प्रेम विविध भावों के रूप में स्फुटित होता रहा और वे विविध भाव उनके हृदय के कोश की अमूल्य सम्पत्ति

बनते चले गये। आलम की अनुभूतियों में तीव्रता, सरसता, मनोवैज्ञानिकता, स्वाभाविकता, सजीवता तथा गहनता के दर्शन होते हैं। आलम के काव्य में वर्णित भावों का विश्लेषण निम्नांकित रूप में प्रस्तुत है -

प्रेम भाव का वर्णन

आलम का सम्पूर्ण काव्य 'प्रेम भाव' से ओत-प्रोत है। आलम ने 'आलमकेलि' तथा 'अक्षरमालिका' के अनेक छन्दों में प्रेम का मार्मिक तथा हृदय स्पर्शी वर्णन किया है। कवि ने प्रेम की अनुभूति को राधा के मन में कृष्ण के प्रति प्रेम के रूप में अभिव्यक्ति प्रदान की है। जब से मनमोहन श्रीकृष्ण में राधा का मन उलझ गया तब से उसे न तो भोजन ही अच्छा लगता है और न ही भवन अच्छा लगता है। यदि शय्या पर लेटती भी है तो अकुलाती रहती है और इस प्रकार व्याकुलता के मारे उसके चित्त में चैन नहीं पड़ता है। 'अक्षरमालिका' की ये पंक्तियाँ प्रेम भाव का उत्कृष्ट उदाहरण हैं -

जब ते उरझ्यौ मन मोहन सौं तब ते कुछ भोजन भौन न भावै।
सेज परै तो उठै अकुलाई सु व्याकुलता चित चैन न पावै।।
लाज के भीत रहे कुछ काज सबै जु सखीनि मैं यौं बहिरावै।
आनन ही कर सी करि लै जहीं सुधि जाति तहीं सुधि आवै।।[4]

कवि की प्रबन्ध रचनाओं जैसे 'माधवानल कामकंदला' तथा 'स्याम स्नेही' में भी प्रेम भाव का प्रभावोत्पादक वर्णन उपलब्ध होता है। माधव कामावती की नर्तकी कामकंदला की नृत्य भंगिमाओं को देखकर उस पर मोहित हो जाता है और उसे अपना हृदय दे डालता है। वह राजा कामसेन से प्राप्त सम्पूर्ण उपहारों को कामकंदला को रीझकर भेंट में दे देता है। उसकी दशा नाद से अभिभूत मृग की सी हो जाती है यथा -

रीझयौ माधव कला बिचारी। मुद्रिक तोडर दए उतारी।।
कनक मुकुट मनिमाल सब, टोडर दए उतारि।
टका कोटि दै दच्छिना, माधौ दिए सुकारि।।
चतुर-चतुर सो नैन मिलावहि। दुहुतन मदन उमगि बहु आवहि।।
जब पारखी नाद मुख गावै। सुनतहि मृग हिय मोहित ह्वे आवै।।
हरिनी कहै हरिन का कीजै। रीझि पारधी कौं का दीजै।।
हमरैं कहा दैन को दाना। कहैं कुरंग सो दीजै प्राना।।[5]

'स्याम स्नेही' प्रबन्ध में आलम ने प्रेम भाव का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। श्रीकृष्ण रूक्मिणी के प्रेम पत्र को पढ़कर रोमांचित हो जाते हैं वे रूक्मिणी के पत्र को बार-बार पढ़ते हैं। उन्हें जन्म-जन्म की अपनी प्रीति याद आ जाती है और आँखों से आंसू छलकने लगते हैं। प्रेम की इस मार्मिक दशा का शब्द चित्र दर्शनीय है -

रोम रोम भरि पुलक पसीजा
कोटि सूर के तपनि तपीसा
पूरन ब्रह्म प्रेम मैं जानहु
सब ऊपर प्रेमहि पहिचानहु
हुइ अचेत प्रभु चेति सभारे
अंसुवन नैनन्ह घूट निवारे
तहँ लग बून्द नैन सो टूटे
जहँ लग बून्द नैन सो टूटै
जहँ लग अंसुवा सबै निछूटै
ले मकरंद चन्द मुख्य धोइन्ह
पत्री आदि अन्त फिरि जोइन्ह
दिनु लपेटि छोरहि पुनि भेटहि
तन मन धनु जनु साथ लपेटहि

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसंबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रीतम की पाती पढ़त जानहु मसि हुई जाउ।
तन मन नैना प्रान हुइ आकन माह समाउ।।[6]

निर्वेद भाव का वर्णन

आलम के काव्य में 'निर्वेद' भाव का भी यत्र-तत्र सफल चित्रण हुआ है। 'माधवानल कामकंदला' में कामावती नगर में कामकंदला को छोड़कर माधव जब जाने लगता है, तब कामकंदला संसार को भोगकर संन्यासिनी होने का विचार कर लेती है और भस्म लगाकर, मुद्रा पहिनकर, घर-घर और वन-वन घूमकर अपने प्रियतम को ढूँढने का निश्चय कर लेती है। इस प्रकार उसमें 'निर्वेद' भाव उत्पन्न हो जाता है। उदाहरण के लिए निम्नांकित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं -

तजि समीप जनि करहु वियोगिनि। तुम बिछुरत ह्वैहौ हम जोगिन।।
कंथा पहिरि जटा सिर केसा। घर-घर फिरहूँ तपस्विनी भेसा।।
मुद्रा पहिरि भस्म सिर लाऊँ। मुख माथौ माघों गुहिराऊँ।।
किंगिरिय गहि दिन रैन बजैहौ। जोगिनि ह्वै माधो गुन गैहों।।
घर-घर वन-वन ढूँढो तोही। सो कछु करौं मिलौ जो मोही।।
खण्ड खण्ड तीरथ करौं, कासी करवत लेहूँ।
मन रक्ष्या करि मरि जियौं, ढूँ ढि मित्र को लेऊँ।[7]

वात्सल्य भाव का चित्रण

आलम के काव्य में यद्यपि वात्सल्य भाव से सम्बन्धित छन्द प्रचुर मात्रा में तो उपलब्ध नहीं होते तथापि कतिपय छन्दों में वात्सल्य भाव का अच्छा प्रयोग किया है। यशोदा अपने आँगन में कृष्ण को बढ़ता देखकर आनन्दित होती है और मन में सोचती है कि वह दिन कब आयेगा, जब उसका बेटा चलना सीखकर ब्रज की गलियों में घूमेगा और उसे माँ कहकर पुकारेगा। वात्सलय भाव से परिपूर्ण यह छन्द उदाहणार्थ प्रस्तुत है -

दैहों दधि मधुर धरनि धरयौ छोरि खैहै,
धाम तें निकसि धौरि धैनु धाइ खोलिहैं।
धूरि लोटि ऐहैं लपटैं हैं लटकत एहैं,
धूरे लेटि ऐहैं लपटें हैं लटकत ऐहैं,
सुखद सुनैं हैं बैनु बतियां अमोल हैं।
'आलम' सुकवि मेरे ललन चलन सीखें,
बलन की बांह ब्रज गलिनि में डोलिहैं।
सुदिन सुदिन दिन ता दिन गनौंगी माई,
जा दिन कन्हैया मो सों मैया कहि बोलि हैं।।[8]

औत्सुक्य भाव

जहां तक औत्सुक्य भाव के वर्णन का सम्बन्ध है कवि आलम ने इस भाव का भी यथा प्रसंग सुन्दर निरूपण किया है। आलम ने इस भाव का स्याम स्नेही काव्य कृति में प्रसंग प्रस्तुत किया है। रूक्मिणी ने जिस ब्राह्मण को श्रीकृष्ण को सन्देश देने के लिए भेजा था, उसे वापस लौटने में विलम्ब हो जाता है, तब श्रीकृष्ण का उत्तर पाने के लिए अधीर होकर मार्ग देखती रहती है। उसकी इस उत्सुकता में अनेक आशंकाएं भी मिश्रित हो गई हैं, जैसा कि निम्नलिखित पंक्तियों में स्पष्ट है -

रूकुमिनि द्वारावति पथु हेरा
पण्डित अजहूँ कीन्ह न फेरा
ब्रामन जाति भीख भट माना
भोजन दछिन अरथ लुभाना
खीरि खाएं भोजन कहु पाइसि
सोन दान धोती मनु लाइसि
कै दिज थकित पंथ भै रहो
मोर सन्देश न प्रभु सन कहो
मारग दूरि देखि हिय हारा
दुर्बल दीन दौरि नहिं पारा[9]

हर्ष भाव का वर्णन

विवेच्य काव्य में कवि ने आनन्दपूर्ण हर्ष भाव का उल्लेख भी बड़ी तत्परता के साथ किया है। कवि ने 'माधवानल कामकंदला' प्रबन्ध रचना में इस भाव का प्रभावशाली वर्णन किया है। राजा विक्रम से युद्ध करते हुए जब राजा कामसेन पराजित हो जाता है। माधवानल और कामकंदला के मिलने पर दोनों का विरह और विषाद नष्ट हो जाता है और दोनों को हर्ष का अनुभव होता है। कवि ने इस भाव दशा को इस प्रकार चित्रण किया है -

काम सैनि जब मिल्यौं जु जाई। फिरि पछितानै सेन जुझाई ।
मिलकरि राज नगर महँ चला। दीनी आनि कामकंदला।।
मिली कंदला बहु सुख पावा। राजा माधो न लहिं बुलावा।।
कलि महँ विरह वियोगिनी, भरि-भरि लेहि उसास।
सीसु ठ गौरी भोर भय, कीनौ सूर प्रकास।।
माधोनल औ कंदला मिलेउ। मिलि बिरही दौनो दुःख दलिऊ।
मिलि के अधिक सुक्ख तिनि पावा। दुउ संताप लै गंग बहावा।।
मिल्यौ सोइ भवत भांवती। राजा नल रानी दमयन्ती।।
मिले भरथरी अरू पिंगला। माधौनल औ कामकंदला।।
पूरक ससि जिमि दुःखित चकोरा। कुमुदिन चक्रवात जिमि मोरा।।
नितप्रति केलि करहिं सुख रहहीं। दिन-दिन प्रीत अधिक मनकरही।।
भावंता जा दिन मिलै, ता दिन होइ आनन्द।
संयति हियें हुलास अति कटि विरहा दुःख फन्द।।[10]

विषाद भाव

आलम ने 'स्याम स्नेही' में विषाद भाव का मार्मिक चित्रण किया है। रूक्मिणी कृष्ण के आगमन में विलम्ब जानकर विषाद ग्रस्त हो जाती है। वह अपने मन में सोचती है यदि अवसर निकल जाने के बाद श्रीकृष्ण आयेंगे तो फिर उन्हें मेरी राख भी नहीं मिलेगी। इस प्रकार वह निराश होकर मरने तक का निश्चय कर लेती है। रूक्मिणी के विषाद् का निम्नांकित पंक्तियों में निरूपण द्रष्टव्य है -

मुवेहु संतापु न जैहै जीते
पाती पहुंचे औसर बीते
ओसर गए किसन जौ आवहि
तौ कहु मोरी भसम न पावहि
जौ हरि दरसु आजु नहि पैहौ
सुलगि स्याम हुइ रैनि समैहों।
जो लग विरह अनल उपजाउ
तौ लग नैनन्ह नदी बहाउ
अब सरीरा वोरा हुइ गरै
सेष रहै सोई पावक जरै
बरि बुझाइ हुइ राख उड़ै हौ
द्वारावती पवन हुई जैहौं।।[11]

कोप भाव का वर्णन

कवि आलम ने अपने काव्य में यत्र-तत्र 'कोप' या क्रोध भाव का भी स्वाभाविक चित्रण किया है। कुंदनपुर के लोगों को जब कृष्ण के द्वारा रूक्मिणी हरण का समाचार मिलता है तो वे क्रोध से आग बबूला हो उठते हैं और कृष्ण पर आक्रमण करने के लिए पीछा करते हैं, उदाहरणार्थ -

जबहि सुनी दुलहिनी हरि हरी
रोस अगिनि सग हुन परजरी
सुनतहि बेगि तजी जिवनारा
बिना पालान होहि असवारा

यह कलि लोग उताइल धावै
गूजरपूत जानि नहिं पावै
गोकुल गोपीजन हरन गोरस हरन अहीर।
अब इहि हरन जो बचि है तब जानहि बर बीर।।[12]

भावों की स्थिति

प्रसंगानुसार भावों की स्थिति में परिवर्तन होता रहता है। यह देखा जाता है कि कभी तो पहले से वर्तमान किसी भाव की शांति हो जाती है अथवा दो भावों में समान उत्कर्ष पाया जाता है या एक भाव का शमन हो जाता है और उसके स्थान पर दूसरे भाव का उदय हो जाता है और कभी-कभी तो एक साथ अनेक भाव प्रकट हो जाते हैं। अतः भावों की स्थिति परिवर्तित होती रहती है। इस आधार पर भावों की स्थिति को निम्नांनुसार स्पष्ट किया जा सकता है -

भाव शान्ति

भाव शान्ति के सम्बन्ध में हिन्दी के आचार्यों ने अपने अपने ढ़ंग से लक्षण दिये हैं। बेनी प्रवीन के अनुसार -

"भाव जहां केहु भाव ते, तत्क्षण उपसम होइ ।
भाव सांति तहँ कहत हैं, कबि कोबिद सब कोइ।।[13]

इसी प्रकार चिन्तामणि की मान्यता है कि

"उपसम पावै भाव जो भावसान्तसो जान।[14]

जबकि भिखारी दास की धारणा है -

"भाव सान्ति सो है जहां मिटत भाव अन्यास।[15]

उपर्युक्त आचार्यों के अनुसार, भावशांति में बेनी प्रवीन और चिंतामणि ने पूर्वाभास के तत्क्षण शमन पर विशेष बल दिया है, जबकि भिखारी दास ने शमन के अनायास होने को विशेष महत्व दिया है।

आधुनिक आचार्यों में पं. रामदहिन मिश्र ने लिखा है "जहां एक भाव दूसरे के विरूद्ध भाव के उदय होने से शांत होता हुआ भी चमत्कारिक प्रतीत होता है, वहां भाव शांति होती है।"[16]

आलम की कविता में भी भावशांति की स्थिति यत्र-तत्र उपलब्ध हो जाती है। इसका सुन्दर उदाहरण है 'स्याम स्नेही' में श्रीकृष्ण के कुन्दनपुर पहुंचने में विलम्ब के कारण रूक्मिणी के मन में विषाद् भाव की उपस्थिति और तत्क्षण पण्डित का पहुंचकर श्रीकृष्ण आगमन की सूचना देना। इस सूचना से विषाद भाव अनायास ही शांत हो जाता है और उसका स्थान 'हर्ष' नामक भाव ले लेता है, उदाहरणार्थ -

इहि विधि झंखत रूकुमिनी: सोचत मरन उपाउ।
तत खन खसिया धाइ कह पण्डित द्वारे आउ।।
तब लग धाइ बूझि सब बानी,
पैठी मन्दिर मन्द मुसकानी
कहै विप्र चित चिन्त निवारहु
हरि आए आरती संवारहु।[17]

भावोदय

आचार्य कवि बेनी प्रवीन ने 'भावोदय' को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि -

काहू भाव विभाव ते, भाव उदै जो होइ।
ताही सों सब कहत हैं, भाव उदय कवि लोइ।।[18]

अर्थात् जहां एक भाव के शमन के बाद दूसरे भाव का उदय हो और उसमें ही चमत्कार निहित हो वहां भावोदय की स्थिति होती है। पण्डित रामदहिन मिश्र का भी यही विचार है। मिश्र जी के अनुसार जहां एक भाव की शांति के उपरान्त उदित भाव में ही चमत्कार का पर्यवसान हो, वहां भावोदय होता है।[19] कवि आलम ने 'भावोदय' स्थिति का रूक्मिणी के लगन प्रसंग में सुंदर वर्णन किया है। रूक्मिणी का वैवाहिक सम्बन्ध जब उसके पिता श्रीकृष्ण से करने के लिए कहते हैं उस समय उनके मन में उल्लास का भाव होता है, परन्तु उसी समय रूक्मिणी का बड़ा

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसंबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भाई रूक्म कुमार पहुंचकर इस सम्बन्ध पर अपनी आपत्ति जताता हुआ क्रोध करने लगता है। इस प्रकार उल्लास भाव का शमन हो जाता है और कोप भाव का उदय हो जाता है और 'कोप' भाव में चमत्कार का पर्यवसान हो जाता है, जैसा कि निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है -

"जौ मत सकल जगत मथि आई
कान्ह बिना मन अन्त न जाई
राजहु यहै मन्त्र बहरायो
जानि बूझि तिन किस्न बतायो
मागहूँ दूब कनक कै थारी
राखहु नारियर तिलक सुपारी
सुदिन धरी गनि इनहि बुलावहु
नगर द्वारिका तिलक पठावहु
नृपति अखेटक ते गृह आवा
यह सुनि सब सौ रिसन रिसावा
ग्वाल भेष जिन गाइ चराई
तिनहिं हमहि नाही होइ सगाई।।[20]

भाव सन्धि

पण्डित रामदहिन मिश्र ने भाव संधि का विवेचन करते हुए लिखा है "जहां एक साथ तुल्य बल एवं सम चमत्कारक दो भावों की संधि हो वहां 'भाव-संधि' होती है।[21] हिन्दी साहित्य कोश में इसे और अधिक स्पष्ट करते हुए डॉ जगदीश गुप्त लिखते हैं "जिनका उत्कर्ष परस्पर समान रूप में अवस्थित हो ऐसे दो भावों के बीच की स्थिति को भाव संधि कहा जाता है। इस संधि स्थल का चमत्कारिक होना अपेक्षित माना जाता है। आवश्यक नहीं कि जिन भावों की संधि हो वे अविरोधी अथवा एक प्रकृति के ही हों, भिन्न प्रकृति के विरोधी भावों के बीच भी भाव संधि हो सकती है। ऐसे स्थल कभी-कभी अधिक चमत्कारिक भी होते हैं।[22] कवि आलम प्रणीत निम्नांकित छन्द में भाव संधि का सुन्दर प्रयोग उपलब्ध होता है। दुःख और उल्लास दो भावों की संधि देखिए -

स्याम संदेसे अंदेसे भरी दुःख ऐसे चरी जैसे काम करा के।
जे चुटिया करि अश्वति नाहींन ते चुटिया भई ठोर बरा के।।
'आलम' बाल बिसूरत ही पिय आनि परे जब द्वार घरा के।
कंचुकी में कुच यौं हुलसैं जु गए बँध टूट्तिराकि तरा के।।23

भाव-शबलता

भाव शबलता की परिभाषा विद्वानों ने अपने-अपने ढ़ंग से दी है। 'नवरस तरंग' में कवि बेनीप्रवीन ने कहा है, "एक-एक को मर दिके उपजत भाव अनेका भाव सबलता कहत हैं, जिनके बुद्धि विवेक।"[24] पद्माकर के अनुसार "पूरब पूरक को मरदि होत जहां बहु भाव।"[25] दूलह ने भी इसी लक्षण का समर्थन किया है -

"पूर्व पूर्व मर्दि के जहां ही बहु भाव होय़
तहां भाव सबलता भाषत गिरा मेरे"[26]

परन्तु भिखारीदास का लक्षण उपर्युक्त परम्परा से भिन्न प्रकार का प्रतीत होता है, जैसा कि दास लिखते हैं -

"बहुत भाव मिलिकै जहां, प्रकट करै इक रंग।
सबल भाव तासों कहैं, जिनकी बुद्धि उतंग।।[27]

इस प्रकार उक्त विवेचन के आधार पर जो परिभाषा निर्धारित होती है, वह यह है कि जहां एक के पश्चात् एक इस प्रकार श्रृंखलाबद्ध क्रम से अनेक भाव प्रकट हो जाएँ अथवा अनेक भावों का एक साथ मिश्रण दिखाई दे, वहां भावशबलता मानी जाती है। आगे आने वाला भाव अपने से पिछले भाव को मर्दित करता हुआ प्रतीत हो इसी में भाव शबलता का चमत्कार निहित रहता है।[28]

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 दिसंबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आलम के काव्य में भाव शबलता के यत्र-तत्र सुन्दर उदाहरण मिल जाते हैं। जैसे कि 'सुदामा चरित' में से इसके कुछ प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। सुदामा जब श्रीकृष्ण से मिलकर द्वारिका से लौटते हैं और अपने घर आते हैं तो वहां पर अपनी कुटिया को न पाकर चिन्तित होते हैं। अपनी पत्नी को सुन्दर वेशभूषा में देखकर पहचान नहीं पाते, भव्य महल को देखकर आश्चर्य चकित हो जाते हैं और वास्तविकता का ज्ञान होने पर श्रीकृष्ण के प्रति अपनी कृतज्ञता के भाव को प्रकट करते हैं। इस प्रकार कवि ने चिन्ता, विस्मय, हर्ष तथा कृतज्ञता आदि अनेक भावों की श्रृंखला सी उपस्थित कर भावशबलता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है -

चिन्ता

गिरद महल दी फिरै सुदामा एक निसान नज़र नहीं आवै।

जाय न औरत तरफ को बामन फिर-फिर उसी ओर मण्डरावै।।

विस्मय

मैं मसकीन गरीब बामन हूँ यह तो किसी भूप की रानी।

मेरे दिल में यह अचम्भा जो यह खातिर मैं क्या आनी।।

कृतज्ञता

तब उठ आई धाय बगल में लिया बामनी अपना भरता।

कहा जु करम किया तिसही ने जौ है इस आलम का करता।।

हर्ष

अपनी सम्पत्ति देख सुदामा हरख भया घर भीतर आया।।

भक्ति

आसन बैठ याद कर दिल में धरा कृष्ण साहब का ध्यान।।[29]

निष्कर्ष

श्रृंगारी कविता में स्वछन्द प्रेमधारा का विकास हुआ। इस धारा के कवियों ने उन्मुक्त प्रेम का वर्णन ही अधिक किया है। अपनी इसी स्वछन्द प्रवृत्ति के कारण वे भक्त कवियों से अलग और प्रेम गायक कवियों में प्रमुख हो जाते हैं। इसमें शुद्ध भक्ति के स्थान पर शुद्ध प्रेमन का ही विकास दृष्टिगोचर होता है। आलम ने अपने काव्य में हृदय के सहज प्रेम को सरल एवं सहज भाषा में अभिव्यक्त किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 चौधरी, डॉ. सत्यदेव व गुप्त डॉ. शान्तिस्वरूप, भारतीय पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन, पृष्ठ 49

2 हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1, पृष्ठ 591

3 भरतः नाट्य शास्त्र, 6/38 का अनुवाद

4 आलम ग्रन्थावली, पृष्ठ 129

5 वही, पृष्ठ 156

6. वही, पृष्ठ 220

7 वही, पृष्ठ 163

8 वही, पृष्ठ 12

9 वही, पृष्ठ 232-33

10 वही, पृष्ठ 188

11 वही, पृष्ठ 233

12 वही, पृष्ठ 250-251

13 बेनी प्रवीन-नवरस तरंग, पृष्ठ 54

14 चिन्तामणि-कवि कुल कल्पतरू, पृष्ठ 214

15 भिखारीदास-काव्य निर्णय, 5/52

16. मिश्र, पं. रामदहिन, काव्य दर्पण, पृष्ठ 298

17. मिश्र, डॉ.विद्यानिवास, आलम ग्रन्थावली, पृष्ठ 233

18 बेनी प्रवीन, नवरस तरंग, पृष्ठ 54

19 मिश्र, पण्डित रामदहिन, काव्य दर्पण, पृष्ठ 299

20 मिश्र, डॉ. विद्यानिवास, आलम ग्रन्थावली, पृष्ठ 209

21 मिश्र, पं. रामदहिन, काव्य दर्पण, पृष्ठ 299

22 हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1, पृष्ठ 596

23 आलम ग्रन्थावली, पृष्ठ 144

24 बेनी प्रवीन, नवरस तरंग, पृष्ठ 55

25 पद्माकर, पद्माभरण, पृष्ठ 77

26 दूलह कवि कुल कल्प तरू, पृष्ठ 75

27 भिखारीदास, काव्य निर्णय, 5 : 50

28 हिन्दी साहित्य कोश, पृष्ठ 595

29 मिश्र, डॉ. विद्यानिवास (सम्पादित) आलम ग्रन्थावली, पृष्ठ 270